

दीपान्विति

घटनाओं, विचारों और कहानियों की कड़ियाँ



मृणाल ठाकुर अभिनीत 'पूजा मेरी जान' का एक दृश्य

एकतरफ़ा प्यार या पागलपन

समाज को आईना दिखाता 'पूजा मेरी जान'

दीपा दिनेशनील

जेंडर रोल्स आजकल विमर्श का एक बहुत बड़ा मुद्दा बन कर सामने आया है। ऐसा नहीं है कि यह पहला मौक़ा है जब स्त्री-पुरुष मुद्दे पर बातचीत हो रही है लेकिन जी-5 पर रिलीज़ 'पूजा मेरी जान' एक ऐसे मुद्दे पर बात कर रही है जिस पर आज तक किसी ने कोई बात ही नहीं की – पुरुष किसी स्त्री की 'ना' को सहजता से क्यों नहीं ले पाते?

हाई स्कूल के दिनों में पापा मुझे 'अल्ट्रा मॉडर्न' कहते थे। बात वही थी कि किसी भी लड़के से खुल कर बात कर लेना क्या उसकी स्वीकृति समझा जाना चाहिए? मैं समझ नहीं पाती थी कि इसमें मेरी गलती कहाँ है। शायद पापा लड़कों की मानसिकता समझते थे। वे यह भी जानते थे कि उनकी कॉन्वेंट में पढ़ रही बेटी की सोच पटना जैसे छोटे शहर के दायरे से बाहर निकल चुकी है। एक स्वच्छंद-उन्मुक्त ख़याल लड़की के लिए उन लड़कों का सामना कर पाना बहुत कठिन होता है जो किसी लड़की की हँसी या खुलेपन को प्यार समझ बैठते हैं, और उसे पाने के सपने देखने लगते हैं। 90 के दशक की वो लड़की आज जब वही सब एक फिल्म में देखती है तो सोचने को मजबूर है कि क्या इन तीन दशकों में कुछ नहीं बदला। लेकिन वो बड़े गर्व से कह सकती है कि बदला है, ज़रूर बदला है। यह फिल्म इस बात का सबूत है। तब ऐसी स्थितियों में दोषी लड़कियाँ ही समझी जाती थीं – चरित्रहनन स्वाभाविक और एक मात्र परिणाम था।

मगर आज लड़कियाँ न सिर्फ़ स्वयं को डिफेंड कर सकती हैं, बल्कि ऐसी फिल्मों के ज़रिए समाज को आईना दिखा रही हैं, जागरूक कर रही हैं और ऐसे लड़कों का मार्गदर्शन भी कर रही हैं जो एकतरफ़ा मोहब्बत को अपने जीने-मरने का मुद्दा बना लेते हैं।

'रिजेक्शन', 'डिप्रेशन', 'सुसाइड' जैसे गंभीर मुद्दे को एक कोर्टरूम ड्रामा के रूप में प्रस्तुत करने के लिए मैडॉक प्रोडक्शन और निर्देशक द्वय विपाशा अरविन्द और नवजोत गुलाटी बधाई के पात्र हैं। आने वाले कई दिनों तक मेन स्ट्रीम मीडिया और सोशल मीडिया इस बहस से अपनी रोटियाँ सकेगा, किन्तु यह तय कर पाना मुश्किल है कि किस पक्ष का पलड़ा भारी होगा, क्योंकि समाज इसके लिए पुर्णतः तैयार नहीं है। ये जानना दिलचस्प होगा कि क्या हाशिए पर इस बार भी स्त्री-चरित्र को ही रखा जाएगा या पुरुष अपनी गलती समझ पाएँगे? इस फ़िल्म के एक सीन में जब पूजा अपने मंगेतर विक्रम से कोर्ट में उसके पक्ष में गवाही देने की बात करती है, तब विक्रम का जवाब मान्य-सा लगता है। वह कैसे पूजा पर यकीन करे जबकि पूजा ने अनिकेत के साथ की गई कई बातें उससे छुपाई। यकीन मानिए पूजा के उत्तर से पहले तक मैं भी पूजा को ही दोषी समझ रही थी, मुझे भी पूजा स्वार्थी, 'गोल्ड डिगर', घमंडी लड़की लगी, बाकियों की तरह। लेकिन पूजा

भारत का वीर

कैप्टन स्मिथ मच्छार: एक परिचय

दीपा दिनेशनील



मात्र 39 वर्षीय स्मिथ मच्छार ने अपनी बहादुरी और कर्तव्य परायणता से साबित कर दिया

कि मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं है। आज समूचा विश्व उनकी वीरता पर नतमस्तक है। आइए भारत के इस वीर पुत्र के जीवन पर एक नज़र डालते हैं: स्मिथ का जन्म मुम्बई में एक गुजराती ब्राह्मण परिवार में 1989 हुआ था। बचपन में पायलट बनना दूर-दूर तक उनके विचारों में नहीं था। अपने पारिवारिक व्यवसाय में आने के इरादे से उन्होंने वेलिंगर इंस्टीट्यूट से टेक्सटाइल इंजीनियरिंग की। 19 साल की उम्र में एक सेमिनार में उन्होंने पहली बार एयरलाइन्स उद्योग के विषय में जाना और तभी से वे पायलट बनने के सपने देखने लगे। वर्ष 2008 में न्यूज़ीलैंड के मेनलैंड एयर से 18 महीने की फ्लाइट ट्रेनिंग ली। यहाँ उनके साथ था उनके बचपन का साथी और पड़ोसी – धारव गोसालिया। न्यूज़ीलैंड में ही उनके साथ प्रशिक्षित हुए साथी कैप्टन धवल पटेल एक इंटरव्यू में बताते हैं कि अपने ट्रेनिंग के दिनों में स्मिथ उड़ान प्रशिक्षण के कॉन्सेप्ट समझने-समझाने में अव्वल थे। मेनलैंड एयर के प्रधान कार्यकारी अधिकारी फ़िलिप कीन बताते हैं कि स्मिथ सदा प्रसन्नचित्त रहते थे और बहुत परिश्रमी थे। वे फ़्लाई बाय एविएशन नामक निजी उड़ान विद्यालय में प्रशिक्षक भी रहे हैं।

एक कॉमर्शियल पायलट के रूप में स्मिथ की पहली उड़ान बैंगलोर से दिल्ली थी जिसे याद कर वे आज भी रोमांचित होते हैं। भारत में स्पाइस जेट को 11 वर्ष अपनी सेवाएँ देने के बाद स्मिथ वर्ष 2022 में फ़्लाईदुबई एयरलाइन्स से जुड़े और अपने परिवार के साथ दुबई चले गए। अपने 15 साल के पायलट जीवन में वे लगभग 9800 घंटे की उड़ान भर चुके हैं जिसमें 6400 घंटे फ्लाइट कप्तान की भूमिका में रहे हैं। अपने कृत्य से स्मिथ ने साबित कर दिया कि वे वास्तव में नायक हैं।



मृणाल ठाकुर, विक्रम सिंह चौहान, हुमा कुरैशी

दएकतरफ़ा प्यार जारी।।।

के जवाब ने सब बदल दिया। मेरी सोच को एक नई दिशा मिली और यही इस फ़िल्म की खासियत है। यह फ़िल्म उस सोशल कंडीशनिंग पर सवाल उठाता है जो समाज को यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्यों केवल स्त्रियों को ही हमेशा कुछ भी पूछ कर करना चाहिए। क्यों अपने जीवन की हर छोटी-बड़ी बात अपने पार्टनर (बॉयफ्रेंड या पति) को बताना स्त्री का कर्तव्य है, जबकि पुरुष ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं है। क्यों आत्मनिर्भर स्त्रियाँ भी आज तक अपने लिए फ़ैसला लेने के लिए स्वतंत्र नहीं हो सकी हैं?

विक्रम, जिससे पूजा अब तक औपचारिक रूप से किसी रिश्ते में बंधी तक नहीं थी, उससे अपेक्षा करता है कि पूजा अपने जीवन की हर बात उससे साझा करे जबकि वह स्वयं कभी कुछ साझा नहीं करता – इस बात को समझना तो दूर, पूजा की बातों से वह हैरान हो जाता है। यह कैसा रिश्ता है जिसमें जवाबदेही भी एकतरफ़ा है और दोष भी। पूर्व में ‘पिक’, ‘दिल धडकने दो’ जैसी फ़िल्में भी स्त्री की स्वतंत्रता, उसकी इच्छा को बहुत प्रभावी ढंग से रेखांकित करती है। ‘पूजा मेरी जान’ इसी श्रेणी में रखी जाने वाली एक बेहतरीन फ़िल्म के रूप में

अच्छी है, बस उनके किरदार को सही प्रोजेक्शन नहीं मिल सका। एक बेहतरीन, संवेदनशील और प्रासंगिक विषय स्क्रिप्ट और निर्देशन के फ्रंट पर उभरी रह गई। फ़िल्म मेकिंग की दृष्टि से भले ही इसमें खामियाँ हों, एक बेहतरीन कहानी और रिलेवेंट विषय के लिए यह फ़िल्म प्रशंसा का पात्र है।

इस फ़िल्म से लड़के-लड़कियाँ दोनों इत्तेफ़ाक रख सकते हैं। वे अनिकेत, विक्रम या पूजा के स्थान पर स्वयं की कल्पना कर सकते हैं या यकीनन किसी-न-किसी पूजा, अनिकेत या विक्रम को जानने का दावा कर सकते हैं। यह हर उस पूजा की कहानी है जिसने कभी-न-कभी किसी के प्यार को ठुकराया होगा, और हर उस अनिकेत की कहानी है जिसने उस ठोकर को चैलेंज की तरह लेकर ‘ना’ को ‘हाँ’ में बदलने की कसम खा ली होगी। एक तरफ ‘छपाक’ जैसी फ़िल्में हैं जिसमें ‘ना’ का जवाब ‘एसिड अटैक’ होता है, ‘पिक’ है जिसमें ‘ना’ का जवाब ‘रेप’ होता है और एक तरफ ‘पूजा मेरी जान’ है जहाँ ‘ना’ आत्महत्या का सबब बन जाता है। ऐसा नहीं है कि समाज में पुरुषों की लाचारी या उनकी शराफ़त का फ़ायदा उठाने वाली औरतें नहीं होतीं, किन्तु उन मुद्दों को फ़िल्मों के जरिए कई बार उजागर किया गया है। स्त्री के अधिकार, उनकी स्वतंत्रता,

सामने आई है। इस फ़िल्म ने सोशल मीडिया और ट्रोलिंग कल्चर को भी बखूबी दर्शाया है। पूरी बात जाने बिना अपनी राय बना लेना और उस राय को चिल्ला-चिल्ला कर सोशल मीडिया शेयर करना – यही तो होता है आज कल। यह फ़िल्म केवल आज के युवाओं के लिए नहीं है बल्कि उन अभिभावकों के लिए भी है जिन्हें अपने बच्चों की कमियाँ नहीं दिखती, लेकिन दूसरों पर ऊँगली पहले उठा देते हैं। कुल मिला कर यह फ़िल्म ऐसे कई मुद्दों को एक साथ समेटने की एक कोशिश कही जा सकती है जिससे हमारा समाज आए दिन गुज़र रहा है।

फ़िल्म में मुख्य भूमिका में हुमा कुरैशी (सना, पूजा की वकील), मृणाल ठाकुर (पूजा), विजय राज (अनिकेत का वकील) और विक्रम सिंह चौहान (अनिकेत) हैं। अदाकरी में मृणाल ठाकुर और विजय राज ने बाज़ी मारी है, हालाँकि हुमा की अदाकरी भी

उनके मूलभूत मानवीय पक्षों को अब एक नई सोच, नए परिप्रेक्ष्य में देखने की ज़रूरत है। पिछले कुछ सालों में ऐसी कई फ़िल्में आई हैं और पसंद भी की गई हैं – तापसी पन्नू अभिनीत थप्पड़, सान्या मल्होत्रा अभिनीत मिसेज़ और पगलेट ऐसे ही मुद्दों पर बात करती है जिसके लिए समाज तैयार नहीं था, क्योंकि ये सालों से चली आ रही उस सोच पर सवाल उठा रही थी जिसे स्त्रियों ने निर्विवादित रूप से स्वीकारा था। खैर, एक फ़िल्म से समाज में परिवर्तन की अपेक्षा करना बहुत ऑप्टिमिस्टिक-सा लगता है, किन्तु इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि कम-से-कम किसी ने ये बातें छेड़ी तो हैं। बात होने से बात बनती है – अब जब बात निकली है तो दूर तक जाने देते हैं, है न!

आप इस विषय पर क्या सोचते हैं, अवश्य बताइए। आपकी राय मायने रखती है ☺

भारत की वीरांगना

नीरजा भनोत: श्रद्धांजलि



30 सितम्बर 2026 को फ्लाईडुबई की फ्लाइट एफ़ज़ेड 1073 की घटना ने 5 सितम्बर 1986 की वह घटना स्मरण करा दी जब फ्लाइट अटेंडेंट नीरजा भनोत ने ऐसी ही बहादुरी दिखाते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। घटना के समय नीरजा मात्र 23 वर्ष की थीं जब उन्होंने असाधारण हिम्मत का प्रदर्शन करते हुए पैन अमेरिकन 73 की बोइंग 747 विमान के 379 यात्रियों और 15 क्रू सदस्यों के प्राणों की रक्षा की थी। बॉम्बे (अब मुंबई) से करांची और फ्रैंकफर्ट होते हुए न्यू यॉर्क जाने वाली इस फ्लाइट को करांची में 4 फिलिस्तीनी आतंकियों द्वारा हाईजैक कर लिया गया था। नीरजा ने बड़ी चतुराई से इंटरकॉम द्वारा यह सूचना कॉकपिट को दी जिससे पायलट कॉकपिट सुरक्षित करने में कामयाब रहे और एक भीषण दुर्घटना को टाला जा सका। हालाँकि इस पूरे प्रकरण में एक यात्री की जान बचाते हुए नीरजा आतंकवादी की गोली का शिकार हो गयीं और उनकी मृत्यु हो गयी। उनकी बहादुरी और त्याग को भारत, अमेरिका और विश्व में सराहा गया था। भारत सरकार ने उनकी वीरता के लिए उन्हें 1987 में मरणोपरांत अशोक चक्र से सम्मानित

किया था। अमेरिका ने भी उनकी बहादुरी का सम्मान करते हुए इसी वर्ष यू एस फ्लाइट सेफ्टी फाउंडेशन के हेरोइज्म पुरस्कार से नावाज़ा था।

कितना अजीब संयोग है यह – उस समय कॉकपिट के द्वार को बंद कर रक्षा की गयी, और इस बार द्वार खोलने से रक्षा हो सकी। चालीस सालों बाद इतिहास फिर से दोहराया गया – तब भारत की बेटी फ़रिश्ता बन कर डटी थी, अब भारत के लाल ने कमाल कर दिखाया है। मोदी जी ने सच ही कहा है, “हम हिन्दुस्तानी जान लेने वाले लोग नहीं हैं, जान बचाने वाले लोग हैं।”

“नीरजा, तुम्हारा बलिदान सिर-आँखों पर! तुम्हारी वीरता को शत शत प्रणाम!” - दीपा



पायलट बना मशीहा: बचाई 174 यात्रियों की जान

स्मिथ मच्छार की हालत बेहतर: प्रधानमंत्री मोदी से स्वयं पूछा हाल

कुछ लोग जॉब को महज़ जॉब की तरह देखते हैं जिसमें काम के बदले वेतन मिलता है और ज़िन्दगी हँसी-खुशी गुज़र हो जाती है। वहीं कुछ लोग काम को पूजा समझते हैं और फ़र्ज़ के नाम पर जान की भी परवाह नहीं करते। फ्लाई दुबई एयरलाइन्स के कैप्टन स्मिथ मच्छार उस दूसरी तरह के प्राणियों में हैं जिन्होंने अपने कर्म से सिद्ध कर दिया कि फ़र्ज़ की राह में जान की बाज़ी लगाना ही उनका कर्तव्य था और उन्होंने वही किया जो इस जॉब में किसी भी पायलट को करना चाहिए – अपने यात्रियों की रक्षा! सुनने में फ़िल्मी लग सकता है मगर यह हाल-फिलहाल की उन विरल घटनाओं में से है जो हमें पुनः मानवता का पाठ पढ़ा गया। उस मुश्किल घड़ी में, जब आपकी एक चाल पर सैकड़ों जान की बाजियाँ लगी हों, तब फ़र्ज़ को खुद के ऊपर रखना सिद्धांतों में तो बेहतर लग सकता है, किन्तु जब स्वयं पर आए तो अच्छे-

अच्छों की हवा निकल जाती है। ऐसे में कैप्टन स्मिथ के हिम्मत, उनकी सूझ-बूझ और त्वरित फैसले की जितनी भी तारीफ़ की जाए, कम है। अपने कर्मों से स्मिथ ने साबित कर दिया कि वे भारत, भारतीय सोच और भारतीयता के सच्चे संवाहक हैं। उनकी इस बहादुरी को भारत, इजराइल, दुबई, अमेरिका समेत दुनिया भर ने सराहा है। ज्ञातव्य हो कि यान दुबई से तेल अवीव जा रही थी जब उनके ओमानी सह-कप्तान ने उन पर चाकू से वार कर यान को क्षति पहुँचाने की कोशिश की। अपनी इस कोशिश में वह कामयाब न हो सका क्योंकि जख्मी हालत में भी स्मिथ ने अपनी जान से अधिक यान और यान पर सवार यात्रियों को बचाने की सोची और समय रहते कॉकपिट का द्वार खोल दिया। यात्रियों के सहयोग से अंततः स्थिति नियंत्रित हो सकी – फ्लाइट और उनकी जान। कैप्टन स्मिथ, दुनिया को तुमपर नाज़ है! Well done Captain 🙏



पायलट स्मिथ से प्रधानमंत्री मोदी की बात

पीएम मोदी ने किया विडियो कॉल

“मेरे सामने भावुक नहीं होंगे तो और कहाँ होंगे!” यह बोल कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक बार फिर समूचे भारतवासियों का दिन जीत लिया। मौक़ा था फ्लाईदुबई के घायल कप्तान स्मिथ से उनकी हालत का जायज़ा लेने का जब मोदी जी ने भावुक हो रहे कैप्टन को स्मरण कराया कि उसका प्रधानमंत्री उसके साथ है और वह दिल खोलकर अपनी बात कर सकता है। मोदी के अपनापन और स्नेह से कैप्टन स्मिथ भावुक भी थे और गौरवान्वित भी। सोशल मीडिया पर पीएम मोदी और कैप्टन स्मिथ की बातें लगातार वायरल हो रही हैं और चारों तरफ़ ट्रेंडिंग कर रही है।

हो भी क्यों न – इससे पहले ऐसा होता कब देखा था कि प्रधानमंत्री स्वयं अपने लोगों को फोन कर उनका हाल-चाल पूछें। जब से मोदी आये हैं, यह सामान्य सी बात हो गयी है। चाहे किसी टूर्नामेंट से खिलाड़ी जीत कर आया हो या हार कर, चाहे शुभांकर शुक्ला अन्तरिक्ष से लौटा हो या चाहे भारतीय वैज्ञानिक किसी मिशन में फेल हुए हों, प्रधानमंत्री मोदी हर भारतवासी के खड़े साथ होकर उसे अपनेपन का एहसास दिलाते हैं - कभी पीठ थपथपाकर तो कभी गले लगाकर हौसलाअफजाई करते हैं, हिम्मत देते हैं, संबल देते हैं, बधाई देते हैं तो कभी रास्ता दिखाते हैं।

यहाँ बात भारत को गौरवान्वित करने की थी, भारत की सोच, उसके कर्म-प्रधान संस्कारों की थी, फिर मोदी जी भला सामने क्यों न आते। कैप्टन स्मिथ से कही उनकी एक-एक बात से उनके व्यक्तित्व की विशालता झलकती है, भारत के प्रति उनकी निष्ठा और सम्मान का पता चलता है और पता चलता है उस विचारधारा का जिसने आज भारत को सम्पूर्ण विश्व में अनुकरणीय बना दिया है, अग्रणी बना दिया है। यहाँ कैप्टन स्मिथ मच्छार की जितनी भी तारीफ़ की जाए कम होगी। अस्पताल बेड पर

होते हुए जिस आत्मविश्वास और स्पष्टता के साथ उन्होंने बातचीत की, उससे उनका व्यक्तित्व भी निखर कर सामने आता है। उन्होंने में कहा कि वे मोदी जी को अपना आदर्श मानते हैं। संकट की उस घड़ी में अपनी और यात्रियों की जान बचाना ही उनका फ़र्ज़ था सो उन्होंने वही किया जो उस पल उन्हें उचित लगा। इस बात के लिए प्रधानमंत्री स्वयं उन्हें कॉल कर हाल-चाल पूछेंगे, यह सोच कर ही वे भावुक हो गए। स्मिथ की कही हर बात से उनके विचार, उनका देशप्रेम और उनके अन्दर की मानवीयता प्रकट हो रही थी। यह घटना हमें स्मरण करता है कि भारत वास्तव में महापुरुषों का देश था, है और रहेगा। जीवन रक्षा हमारे खून में है। देशहित हमारी पहचान है। और कर्म करना हमारा संस्कार है। यह भी गर्व की बात है की भारत के इस बहादुर पुत्र को इजराइल के राष्ट्रपति नेतान्याहू ने भी खूब सराहा है। एक इजरायली मंत्री अल्मोग कोहेन ने इजरायल के बेन गुरियन एअरपोर्ट के एक लाउन्ज का नाम स्मिथ के नाम पर करने की घोषणा की है। इसके साथ ही देश-विदेश के तमाम लोग स्मिथ की बहादुरी और उनकी सलामती के लिए प्रार्थना कर रहे हैं।



बाएँ से दाएँ: अंकुश पंधाल(मुक्केबाजी), लवलीना बोगोहैन(मुक्केबाजी), नीरू ढांडा((शूटिंग), परवीन हुडा(मुक्केबाजी) और सुजीत कल्कल(कुश्ती)

एशियाई खेलों में भारत का अभूतपूर्व प्रदर्शन

85 पदक - 21 स्वर्ण, 27 रजत और 37 कांस्य जीत कर पदक तालिका में चौथा स्थान

----- दीपा दिनेशनील

व्यापार हो, व्यवहार हो या हो खेल-संसार, भारत अपने स्वर्णिम काल में हर तरफ प्रगति पथ पर अग्रसर है। नागोया में चल रहे 2026 के एशियाई खेलों में भारत का अभियान कई खेलों में पदक जीतने वाला रहा है, विशेष रूप से हॉकी, क्रिकेट, तीरंदाजी, मुक्केबाजी, कुश्ती और गोल्फ में उल्लेखनीय सफलताएँ मिली हैं। 85 पदकों का आँकड़ा भारत के लिए एक व्यापक और विविध प्रदर्शन को दर्शाता है, हालांकि यह पिछले एशियाई खेलों से 22 पदक कम है। 19 सितम्बर – 4 अक्टूबर तक चलने वाला यह 20वाँ एशियाई खेल है जिसमें भारत का प्रदर्शन बेहतरीन कहा जा सकता है।

महिला हॉकी टीम का चीन को 1-0 से हराकर स्वर्ण पदक जीतना एक ऐतिहासिक घटना है जो 44 वर्षों के लम्बे इंतजार के बाद भारत की झोली में आया है। क्रिकेट में पुरुष और महिला दोनों वर्गों में स्वर्ण भारत के हिस्से आया जिसमें पुरुष टीम ने मात्र 19 रनों से पकिस्तान को हराकर दूसरी बार यह जीत हासिल की है। तीरंदाजी में 17 वर्षीया कुमकुम महोद ने महिला व्यक्तिगत रिकर्व में स्वर्ण जीतकर 2028 के लॉस एंजेलिस ओलम्पिक का कोटा हासिल किया। गोल्फ में प्रणवी उर्स ने महिला व्यक्तिगत स्पर्धा का भारत के लिए पहला स्वर्ण जीत कर इतिहास रचा जबकि भारतीय महिला गोल्फ टीम भी रजत पदक पाने में कामयाब रही। निशानेबाजी में नीरू ढांडा ने विमेंस ट्रैप में व्यक्तिगत स्वर्ण जीत कर एशियाई रिकॉर्ड बनाया है। एथलेटिक्स में महिलाओं की टीम ने कमाल कर दिया। 3 रेस, 3 पदक और 42 साल का पी. टी. उषा का राष्ट्रीय रिकॉर्ड टूटना – ये एक ही बात बयाँ करती हैं, “हमारी छोड़ियाँ छोड़ों से कम हैं क्या?”

भारत की विथ्या रामराज नागोया से अपने साथ ला रही हैं: विमेंस 4x400m रिले रेस के लिए स्वर्ण पदक 🏆, मिक्स्ट 4x400m रिले रेस के लिए रजत पदक 🥈 और विमेंस 400m हर्डल्स के लिए कांस्य पदक 🥉 ब्रॉन्ज और एक नया नैशनल रिकॉर्ड 🏆 - 54.75 सेकंड. इस जीत का सबसे सुन्दर पहलू यह है कि जीतने के बाद मीडिया से बातचीत के दौरान विथ्या कहती हैं -



कि उनका फोकस जीतना नहीं, अपना ही रिकॉर्ड बीट करना था। एक खिलाड़ी के इस जज़्बे ने सभी खेलप्रेमियों का मन जीत लिया। पुरुषों ने भी पदक हासिल करने में कोई कोताही नहीं बरती है। 1978 के बाद भारत पुरुषों की फ्रीस्टाइल कुश्ती में 2 स्वर्ण पदक अपने नाम करवा चुका है। अमन शेरवत और सुजीत कल्कल ने बेहद रोमांचक जीत हासिल की है। मतलब साफ़ है, नेतृत्व का असर अब समूचे देश में देखा जा सकता है। एशियन गेम्स इसका जीता-जागता प्रमाण है जहाँ खिलाड़ी खेलभाव, देशप्रेम और भारत का परचम लहराए एक के बाद एक सफलता के नए कीर्तिमान गढ़े हैं। जिन खेलों में पदक नहीं मिल सके, उन खिलाड़ियों के लिए – There is always a next chance ! 👍